धनबाद तथा झारखंड में बांग्ला नववर्ष की धूम

धनबाद, झारखंड। प्रति वर्ष जनवरी से लेकर अप्रैल। चार महीने के दरम्यान ही हम तीन बार नववर्ष मना लेते हैं। सबसे पहले फर्स्ट जनवरी को हम अंग्रेजी नववर्ष मनाते हैं, फिर मार्च या अप्रैल को हम हिंदी कैलेंडर का नया साल शुरू करते हैं। फिर हर साल 14 या 15 अप्रैल को हम बांग्ला नववर्ष की धूम मचा देते हैं। पश्चिम बंगाल के पड़ोसी राज्य होने के नाते झारखंड में भी प्रचुर संख्या में बांग्लाभाषी लोग रहते हैं। धनबाद, जमशेदपुर, रांची, पाकुड़ , साहिबगंज, बोकारो, चास और हजारीबाग में 'पोयला बोइशाख' अर्थात बैशाख मास की पहली तारीख को बांग्लाभाषियों में नववर्ष मनाने की अ'छी खासी धूम देखी जा सकती है। धनबाद का हीरापुर नामक स्थान तो इस अवसर पर मानो मिनी बंगाल का ही रूप ले लेता है। सनातन हिंदू धर्म के चैत्र महीने में हिंदी कैलेंडर और बैशाख महीने में बांग्ला कैलेंडर का नया साल शुरू हो जाता है। बंगाली लोग 'पोयला बोइशाख' की तैयारी पहले से ही शुरू कर देते हैं। अन्य दिनों में फूल पैंट, शर्ट या जीन्स और टी-शर्ट पहनने वाले लोग नववर्ष के उपलक्ष्य में पजामा कुर्ता और कोई कोई तो धोती कुर्ता पहन कर भी खुशियां मनाते हैं। व्यापारी लोग इसी दिन से नए बही खाता की पूजा कर उनका उपयोग शुरू कर देते हैं। पोयला बोइशाख के दिन अनेक घरों में सत्यनारायण भगवान की पूजा की जाती है। 'लूची' या पुड़ी के साथ मिठाई और अन्य सुस्वादु व्यंजनों की खूब तैयारी की जाती है। नए पजामा कुर्ता पहन कर, एक दूसरे से कंधा मिलाकर 'शुभो नबो बोरसो' कहना पोयला बोइशाख का चिरंतन प्रथा है। बंगालियों के लिए बैशाख का महीना एक और कारण से महत्वपूर्ण है। इसी महीने की 25 तारीख को हम कवि गुरु रवींद्र नाथ टैगोर का जन्मदिन भी बड़े उत्साह के साथ मनाते है।

(अनित कुमार राय टिंकू, बाघमारा, धनबाद।)(6200303595)

संसार में मृत्य अटल सत्य है-मानवीय मृत्यु का अनसुल्झा रहस्य बरकार

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में भी मनुष्य या कोई जीव मृत देह मैं कैसे बदल जाता है, विज्ञान इस सवाल से निरंतर जूझ रहा है?

कुदरत द्वारा बनाई इस अनमोल खूबसूरत सृष्टि में कुदरत की अनमोल कलाकृति मानवीय जीव के रूप में सृजित हुई और जिस मानवीय कुनबे में शिशु का जन्म होता है वहां खुशियों की बहार छा जाती है ऐसा सदियों से हजारों वर्षों से होता आया है और वर्तमान काल में भी हो रहा है। इस संसार में मृत्य अटल सत्य है जिसने भी जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है। लेकिन लोगों के मन हमेशा एक सवाल उठता है कि आखिर मौत के बाद क्या होता है?

अगर आत्म होती है, तो कहां जाती है? मौत के बाद मनुष्य का शरीर शिथिल हो जाता है। इस पर पहले कई शोध हुए हैं जो अभी भी जारी है। मैं यह मानता हूं कि प्रकृति के कई अनसुलझे रहस्य हैं जिसे सुलझाना अभी भी बाकी है। उन्हीं में से एक है आत्मा और मौत। जब किसी मानवीय जीव की मृत्यु हो जाती है तो आदि अनादि काल से यह भी सच है कि उसी कुनबे में अति संवेदनशील दुखों का पल छा जाते हैं और उनका कुनबा यह सोचने पर मज़बूर हो जाता है कि आखिर ऐसा क्या इस शरीर में से निकल गया जो यह शरीर निर्जीव हो गया जो आज के वर्तमान परिपेक्ष में भी एक अनसुलझा रहस्य बना हुआ है! जिसके विज्ञान, विशेषज्ञों, जानकारों के अलग अलग तर्क दिए गए हैं परंतु हमारे बड़े बुजुर्गों और आध्यात्मिकता में यह ईश्वर अल्लाह की देन है और कहा गया है कि हम मानवीय जीव उसके हाथ के बने खिलौने हैं जिनका वह जीवन फिक्स कर देता है और समय आने पर उसे तोड़ देता है याने मृत्यु!

मृत्यु नाम सुनते ही दिल दहल जाता है, कांप जाता है। जिस तरह हमने कोरोना महामारी कॉल की पीक़ स्थिति में मृत्यु का तांडव देखे, तो दिल पसीज़ गया था। हमनें फिल्म उद्योग की पुरानी फिल्म पुष्पांजलि का दर्द भरा गीत, दुनिया से जाने वाले, जाने चले जाते हैं कहां, कैसे ढूंढे कोई उनको नहीं होते नामोनिशान और चिट्ठी न कोई संदेश, ना जाने कौन सा देश, जहां तुम चले गए सुनें होंगे जो दुखों के पलों में अक्सर याद आते हैं। हालांकि इन गीतों से भी वही प्रश्न गूंज रहा है कि आखिर मानवीय शरीर में से ऐसा क्या निकल जाता है और कहां चला जाता है जो शरीर निर्जीव हो जाता है! उसका रहस्य आज भी अनसुलझा है! और मेरा मानना है कि शायद कभी सुल्झेगा भी नहीं चाहे कितना भी प्रौद्योगिकी विज्ञान का उपयोग किया जाए?

मृत्यु शब्द नही बल्कि, मीडिया में जानकारी के अनुसार, मृत्यु एक परम पवित्र मंगलकारी देवी है। सामान्य भाषा मे किसी भी जीवात्मा अर्थात प्राणी के जीवन के अन्त को मृत्यु कहते हैं। मृत्यु सामान्यतः वृद्धावस्था, लालच, मोह,रोग कुपोषण के परिणामस्वरूप होती है।मुख्यतया मृत्युके 101 स्वरूप होते है, लेकिन मुख्य 8 प्रकार की होती है। जिसमे बुढ़ापा, रोग, दुर्घटना, अकस्मती आघात, शोक,चिंता, और लालच मृत्यु के मुख्य रूप है। विज्ञान विशेषज्ञों, जानकारों का अलग-अलग तर्क है, हालांकि विज्ञान के अनुसार, मृत्यु का अर्थ है जीवित प्राणी के शरीर की सभी जैविक प्रक्रियाओं का समाप्त हो जाना। जैविक प्रक्रिया को दिल के धड़कने, मस्तिष्क के निर्णय लेने की क्षमता, किडनी और लीवर जैसे अंगों के सुचारु ढंग से काम करने में समझा जा सकता है। ये प्रक्रियाएं समाप्त होते ही हमारी मृत्यु हो जाती है। विशेषज्ञों की जानकारी के अनुसार,शरीर की जैविक प्रकियाएं कई कारणों से रुक सकती हैं। उम्र का ढल जाना यानी बूढ़ा हो जाना, किसी दूसरे व्यक्ति का प्राणघातक हमला, कुपोषण, बीमारी, आत्महत्या, भूख, प्यास, दुर्घटना या आघात आदि से ये प्र?किया रुक सकती है। मृत्यु के बाद शरीर तेजी से विघटित होता है, और कई तत्वों में टूट जाता? है। भारतीय दर्शन में ये संकल्पना है ही कि शरीर का ?निर्माण पंचतत्वों से हुआ है और अंततः उन्हीं तत्वों में विलीन हो जाता है।

जीवन और मृत्यु के बीच सटीक सीमा रेखा क्या है? किस क्षण में जीवन मृत्यु में बदल जाता है? शरीर का वह कौन अंतिम अंग या कण है, जिसके रुकते ही जीवन रुक जाता है और मनुष्य या कोई भी जीव मृत देह में बदल जाता है, विज्ञान इस सवाल से निरंतर जूझ रहा है?बहरहाल मनुष्य का शरीर एक अद्भुत मशीन है। जिसका हर पुर्जा एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। लेकिन यह सवाल अभी अनुत्तरित है कि वह कौन सा तत्व है जिसे जीवन का जनक माना जाए या जीवन के न होने की वजह माना जाए!

बुजुर्गों और आध्यात्मिकता के दृष्टिकोण के अनुसार यह जन्म मृत्यु ईश्वर अल्लाह की देन है उनके अनुसार, आध्यात्मिक दृष्टिकोण से आत्मा शरीर में वास करती हैं। मगर मृत्यु के बाद ये शरीर को त्याग देती है और दूसरे शरीर को धारण कर लेती है। आत्मा ईश्वर का ही एक स्वरूप है। मगर इसे कोई देख नहीं सकता है।

आत्मा को नश्वर माना जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से इसका न कोई आकारा होता है और न ही स्वरूप, मृत्यु एक जीव को बनाए रखने वाले सभी जैविक कार्यों की अपरिवर्तनीय समाप्ति है। मीडिया के अनुसार, मृत्यु के बाद क्या होता है, क्या दोबारा जीवन मिलता है, या फिर नहीं। इस बात पर चर्चा फिर से शुरू हो गई है। मीडिया के अनुसार एक प्रदेश में हाल ही में तीन ऐसी घटनाएं हुईं, जिनमें मृत्यु के बाद जीवन मिला। विज्ञान की भाषा में कहें तो सब कुछ व्यर्थ की बातें हैं, लेकिन आज भी कुछ अनसुलझे रहस्य हैं, जिनके आगे विज्ञान भी नतमस्तक है। यह कहना गलत इस लोक के बाहर दुनिया नहीं है या जिस तरह पृथ्वी पर जिस तरह जीवन है, उस तरह अन्य गृहों पर जीवन नहीं है। विज्ञान भी ऐलियन जैसी बातों को मान रहा है। इसलिए यह भी सत्य है, कि हमारे शास्त्रों के अनुसार पूरे ब्रह्मांड को चलाने वाले शक्ति भी है और हमारी मृत्यु के बाद कर्मों का लेखा जोखा होता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि संसार में मृत्य अटल सत्य है-मानवीय मृत्यु का अनसुल्झा रहस्य बरकार आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में भी मनुष्य या कोई भी जीव मृत देह में कैसे बदल जाता है!विज्ञान इस सवाल से निरंतर जूझ रहा है? मानवीय मृत्यु एक अनसुलझी पहेली बनी हुई है कि शरीर से आखिर ऐसा क्या निकल जाता है कि शरीर निर्जीव हो जाता है।

-संकलनकर्ता लेखक - क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए(एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

इनफिनिक्स ने नोट 60 प्रो 5जी पेश किया

एक न्यू-एज स्मार्टफोन ब्रांड, इनफिनिक्स ने आज इनफिनिक्स नोट 60 प्रो लॉन्च करने की घोषणा की। यह एक डिज़ाइन-आधारित स्मार्टफोन है जिसे उन यूज़र्स के लिए बनाया गया है जो बेहतरीन क्राफ्ट्समैनशिप, एक्सप्रेसिव इंटरेक्शन और निरंतर परफॉर्मेंस को महत्व देते हैं। 28,999 रुपये की शुरुआती कीमत वाला यह डिवाइस, 360ए एयरोस्पेस ग्रेड एल्युमीनियम फ्रेम डिज़ाइन के साथ अपना पहला एक्टिव मैट्रिक्स डिस्प्ले और स्नैपड्रैगन 7s जेन 4 परफॉर्मेंस पेश करता है, जो एक ऐसा प्रीमियम अनुभव प्रदान करता है जो शानदार और शक्तिशाली दोनों है।

लॉन्च पर टिप्पणी करते हुए, इनफिनिक्स इंडिया के हेड ऑफ मार्केटिंग, मिराज गुप्ता ने कहा आज हम नोट सीरीज़ को कैसे बनाते हैं, इसके केंद्र में भारत है। नोट 60 प्रो के साथ, हम अपना पहला स्नैपड्रैगन-संचालित नोट पेश कर रहे हैं, जिसे 120एफपीएस तक की गेमिंग देने के लिए क्वालकॉम के साथ सह-इंजीनियर किया गया है।

इसके साथ ही, भारतीय यूज़र्स के लिए तैयार किया गया हमारा सिग्नेचर एक्टिव मैट्रिक्स डिस्प्ले, इमर्सिव जेबीएल ऑडियो और एक सिनेमैटिक व्यूइंग एक्सपीरियंस है जिसे इस बात पर गहराई से ध्यान केंद्रित करते हुए बनाया गया है कि वास्तव में क्या मायने रखता है, उन यूज़र्स के लिए जो सिर्फ परफॉर्मेंस नहीं चाहते, बल्कि भीड़ से अलग दिखना चाहते हैं।

नोट 60 प्रो, इनफिनिक्स के उस रणनीतिक बदलाव को दर्शाता है जो एस्पिरेशनल डिज़ाइन को भरोसेमंद परफॉर्मेंस के साथ जोड़ने वाले उत्पाद बनाने की दिशा में है।

इसे उन यूज़र्स के लिए तैयार किया गया है जो सिर्फ स्पेसिफिकेशन्स से ज्यादा कुछ चाहते हैं, जो एक ही डिवाइस में पहचान, इंटरेक्शन और बेहतरीन इंजीनियरिंग को महत्व देते हैं। स्क्रीन बंद होने पर भी रियल-टाइम इंटरेक्शन के लिए एक्टिव मैट्रिक्स डिस्प्ले नोट 60 प्रो सेगमेंट का पहला कस्टमाइज़ेबल एक्टिव मैट्रिक्स एलईडी डिस्प्ले पेश करता है, जिसे कैमरा मॉड्यूल के भीतर इंटिग्रेट किया गया है और यह 288 स्वतंत्र एलईडी पिक्सल द्वारा संचालित है।

यह अधिक शानदार और कस्टमाइज़ेबल अनुभव के लिए बेहतर विजिबिलिटी और डायनामिक लाइटिंग पैटर्न प्रदान करता है, जो रोज़मर्रा के अलर्ट को एक आकर्षक विज़ुअल इंटरेक्शन में बदल देता है।

सीएमसीएलडीपी के छात्र-छात्राओं ने मनाई डॉ.अम्बेडकर जयंती

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद विकासखंड महिदपुर जिला उज्जैन द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम के छात्र-छात्राओं ने विकासखंड समन्वयक श्रीमती नम्रता तिवारी के नेतृत्व में समानता, सामाजिक न्याय और ज्ञान के प्रतीक भारत रत्न डॉ.बाबासाहेब भीमराव आंबेडकरजी की 135वीं जयंती मनाई। शुभारंभ बाबा साहब के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित करके किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए महेश जोशी पूर्व नगर मंडल अध्यक्ष ने कहा कि बाबा साहेब का जीवन हमें शिक्षित बनने, संगठित होने और संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो बाबा साहेब के इस मूल मंत्र के साथ संविधान के निर्माता, दलितों के मसीहा, न्याय, समानता और बंधुत्व के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले बाबा साहेब के आदर्श हमें प्रेरित करते रहेंगे।विकासखंड समन्वयक नम्रता तिवारी ने कहा कि आइए, इस पावन दिन पर हम सभी बाबा साहेब के विचारों को अपनाकर एक समता मूलक समाज के निर्माण का संकल्प लें एवं संविधान का पालन करते हुए समाज निर्माण में अच्छे नागरिक की भूमिका का निर्वहन करें। शिवदयाल शर्मा द्वारा भारत के संविधान उद्देशिका का संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम उपरांत जल गंगा संवर्धन अभियान द्वितीय चरण जल स्रोत सेवा समागम कार्यक्रम अंतर्गत महिदपुर नगर स्थित चोपड़ा की बावड़ी हनुमान मंदिर पर नगर विकास प्रस्फुटन समिति, मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के विद्यार्थी एवं परामर्शदाता के साथ स्वच्छता अभियान चलाकर जल संरक्षण एवं संवर्धन का सामूहिक संकल्प लिया।

पेप्सी कैंपेन ने 2.5 बिलियन व्यूज़ पार किए

अहान पांडे और अनीत पड्डा द्वारा पेश किए गए पेप्सी के लेटेस्ट समर कैंपेन ने इंस्टाग्राम पर रिलीज़ के एक महीने के भीतर 2.5 बिलियन व्यूज़ का आंकड़ा पार कर लिया है।

यह भारत के सबसे ज्यादा देखे जाने वाले ब्रांड फिल्मों में से एक बनकर उभरा है और यह दर्शाता है कि नई पीढ़ी के कलाकार पॉप कल्चर की बातचीत को किस तरह आकार दे रहे हैं।

ऐसे समय में जब ब्रांड्स बिखरे हुए ऑडियंस अटेंशन के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, यह कैंपेन अपने एंटरटेनमेंट-फर्स्ट अप्रोच के कारण अलग नजर आता है, जो विज्ञापन और कंटेंट के बीच की सीमाओं को धुंधला करता है। यह फिल्म तेजी से ऑनलाइन ट्रेंड करने लगी, जहां दर्शकों ने इस जोड़ी की नई ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री और युवा ऊर्जा को काफी पसंद किया। इंस्टाग्राम पर इस कैंपेन को जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला, जो हाई शेयरबिलिटी और लगातार ऑडियंस एंगेजमेंट के कारण और भी बढ़ता गया।

टीज़र से रिवील तक की कहानी के रूप में डिजाइन किए गए इस कैंपेन ने पहले दर्शकों में जिज्ञासा और चर्चाएं पैदा कीं और फिर ब्रांड कनेक्शन को सामने लाया। इस अप्रोच ने लगातार चर्चा और दोबारा देखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। यह फॉर्मेट और इसके लीड एक्टर्स की रिलेटेबिलिटी इसे पारंपरिक विज्ञापन से ज्यादा एक एंटरटेनमेंट कंटेंट के करीब ले जाती है।

इस कैंपेन को लेकर बातचीत का एक बड़ा हिस्सा अहान पांडे और अनीत पड्डा के इर्द-गिर्द भी रहा, जिन्हें एक नई पहचान के साथ उभरते हुए चेहरे के रूप में देखा जा रहा है। उनकी अलग, निडर और बिना फिल्टर की स्क्रीन प्रेज़ेंस ने उन्हें डिजिटल स्पेस की भीड़ में अलग पहचान दिलाई है। पेप्सी के साथ उनका जुड़ाव उन्हें एक बड़ी विरासत का हिस्सा भी बनाता है।

वर्षों से यह ब्रांड मनोरंजन और खेल जगत के बड़े नामों जैसे शाहरुख़ खान , रणबीर कपूर , दीपिका पादुकोण और विराट कोहली के साथ जुड़ा रहा है, जिससे यह मुख्यधारा की लोकप्रियता का एक सांस्कृतिक प्रतीक बन गया है। ऐसे में अहान पांडे और अनीत पड्डा का इस ब्रांड के नए चेहरे बनना एक पीढ़ीगत बदलाव का संकेत देता है, क्योंकि पेप्सी लगातार युवा दर्शकों के साथ खुद को विकसित कर रहा है।

शिक्षित युवाओं में बेरोज़गारी की उच्च दर

शिक्षित लोगों की आबादी में भारी बढ़ोतरी के बावजूद, महत्वाकांक्षी भारत में हाल के दिनों में कृषि क्षेत्र में रोजगार की संख्या बढ़ती हुई दिख रही है -- जो कि एक विडंबना ही है! जिसे अक्सर डेमोग्राफिक डिविडेंड (जनसांख्यिकीय लाभांश) कहा जाता है - यानी कुल आबादी में काम करने लायक उम्र के लोगों का ज़्यादा अनुपात होना -- वह 2030 तक खत्म हो जाएगा ; उसके बाद युवाओं का यह हिस्सा अपने चरम पर पहुँचने के बाद घटने लगेगा। अपने चरम पर, काम करने लायक उम्र की आबादी का हिस्सा, आश्रित आबादी के हिस्से से दोगुने से भी ज़्यादा होगा। दुर्भाग्य से, ऐसा लगता है कि कुछ ही सालों की इस छोटी-सी अवधि में इस लाभांश का लाभ उठा पाना अकल्पनीय है, क्योंकि %स्टेट ऑफ़ वर्किंग इंडिया% पर हाल ही में आई एक रिपोर्ट बताती है कि स्नातक युवाओं में बेरोज़गारी की दर 40 प्रतिशत तक पहुँच गई है। एक और चौंकाने वाला तथ्य यह है कि युवा लड़के-लड़कियाँ अपने परिवारों की मदद करने के लिए पढ़ाई बीच में ही छोड़ रहे हैं।

भारत में 15 से 29 साल की उम्र के 36.7 करोड़ लोग रहते हैं, जो दुनिया में सबसे ज़्यादा है, और यह काम करने लायक उम्र की कुल आबादी का एक-तिहाई हिस्सा है। इन 36.7 करोड़ लोगों में से कुछ ने खुद को श्रम बाज़ार से अलग कर लिया है, क्योंकि वे अभी भी पढ़ाई कर रहे हैं, जबकि 26.3 करोड़ युवा भारत की संभावित युवा कार्यबल का हिस्सा हैं। यह संख्या किसी भी यूरोपीय देश की आबादी से कहीं ज़्यादा है, और ब्राज़ील या पाकिस्तान जैसे देशों की कुल आबादी से भी ज़्यादा है। 20 से 29 साल के आयु वर्ग के युवा लोगों में से 6.3 करोड़ लोगों ने स्नातक या उससे ऊपर की पढ़ाई पूरी की है, और उनमें से 1.10 करोड़ स्नातक युवा बेरोज़गार हैं। यह संख्या स्वीडन या पुर्तगाल की कुल आबादी से भी ज़्यादा है। शिक्षित लोगों में बेरोज़गारी का यह विशाल सागर दो महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है ÷ पहला, स्नातक कार्यबल की मांग और आपूर्ति के बीच बढ़ता हुआ अंतर ; और दूसरा, इससे जुड़ा हुआ तथ्य यह है कि भारत में उत्पादन प्रक्रिया अभी भी कम पढ़े-लिखे और सस्ते श्रम पर ही निर्भर है।

दिलचस्प बात यह है कि इस कार्यबल का गैर-कृषि क्षेत्रों की गतिविधियों से कृषि क्षेत्र की ओर वापस लौटना, और कृषि क्षेत्र में महिलाओं के रोज़गार का हिस्सा बढ़ना -- ये दोनों बातें %विकसित भारत% की ओर बढ़ते कदम के दावों की विडंबना को ही दर्शाती हैं।

कृषि की ओर उल्टा प्रवाह

आर्थिक विकास की अवधारणा में एक संरचनात्मक बदलाव की प्रक्रिया शामिल होती है, जिसमें लोग कम उत्पादकता वाले कामों से ज़्यादा उत्पादकता वाले कामों की ओर जाते हैं। चूंकि कृषि की उत्पादकता में ज़मीन और मज़दूरी दोनों की उत्पादकता का मिला-जुला असर होती है, और चूंकि ज़मीन की उत्पादकता अपनी प्राकृतिक सीमाओं के करीब पहुँच चुकी होती है, इसलिए आम तौर पर यह माना जाता है कि लोगों का कृषि संबंधी गतिविधियों से हटकर औद्योगिक और सेवा-संबंधी गतिविधियों की ओर जाना प्रगति का संकेत है। लेकिन इस प्रक्रिया के साथ-साथ, सिर्फ़ अलग-अलग क्षेत्रों के बीच बदलाव होने के बजाय, ज़्यादा उत्पादकता वाली गतिविधियों की ओर लगातार आगे बढ़ना भी ज़रूरी है। पिछले चार दशकों में, भारत में आबादी का कृषि संबंधी गतिविधियों से हटकर गैर-कृषि गतिविधियों की ओर, खासकर सेवा और निर्माण-संबंधी गतिविधियों की ओर, बड़े पैमाने पर बदलाव देखने को मिला है। लेकिन 2017 के बाद से, कृषि-संबंधी गतिविधियों के हिस्से में बढ़ोतरी हुई है। कोविड के बाद के दौर (2021-22 से 2023-24) में, भारत की रोज़गारशुदा आबादी 49 करोड़ से बढ़कर 57.2 करोड़ हो गई है। इसका मतलब है कि 8.2 करोड़ नए रोजगार पैदा हुए हैं, जिनमें से 4 करोड़ रोजगार कृषि क्षेत्र में ही पैदा हुए हैं। इन नए रोजगारों में से 3.8 करोड़ रोजगार महिलाओं को ही मिले हैं।

यह बात दिलचस्प है कि कृषि क्षेत्र में काम करने वाले पुरुषों का हिस्सा 1983 से लगातार कम होता जा रहा है, जबकि महिलाओं का हिस्सा 2017 से बढ़ा है। हाल के वर्षों में, कृषि से जुड़ी गतिविधियों में युवा और बुज़ुर्ग, दोनों ही तरह की महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। कई अध्ययनों में कृषि कार्यबल में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी (फेमिनिज़ेशन) पर टिप्पणी की गई है। इसकी मुख्य वजह %बिना वेतन वाले पारिवारिक श्रम% में हुई बढ़ोतरी को माना जाता है, जो इस प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाता है। इससे जुड़ा एक और तथ्य यह है कि %स्व-रोज़गार% करने वाली महिलाओं की संख्या में चार गुना बढ़ोतरी हुई है। इस तरह का स्व-रोज़गार मुख्य रूप से घर के भीतर ही किया जाता है, जिसमें किसी भी वेतनभोगी कर्मचारी को काम पर नहीं रखा जाता। इस तरह के स्व-रोज़गार वाले उद्यमों की संख्या में हुई बढ़ोतरी, असल में, लाभकारी रोज़गार के अन्य विकल्प न होने पर अपनाई गई %गुज़ारा करने की रणनीति% का ही एक रूप है। सरकार के सावधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) रिपोर्टों से मिले आँकड़े भी यही बताते हैं कि भारत में स्व-रोज़गार करने वालों की कमाई, वेतनभोगी कर्मचारियों की औसत आय से कम है। साथ ही, पुरुषों और महिलाओं, दोनों की ही औसत आय लगभग स्थिर हो गई है। यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि महिलाएँ अपनी मर्ज़ी के बिना ही गैर-कृषि क्षेत्रों की गतिविधियों से निकलकर वापस कृषि क्षेत्र की ओर लौट रही हैं। उन्हें एक बार फिर से ऐसी घरेलू गतिविधियों में जुटने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है, जिनसे उन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं मिलता। इसकी एक वजह यह भी है कि पुरुषों का बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है और वे रोज़गार की तलाश में अपने घर-बार छोड़कर दूर-दराज़ के इलाकों में जाने के लिए मजबूर हो रहे हैं। ऐसे में, महिलाएँ घर-परिवार की देखभाल करने और गुज़ारा करने के लिए ज़रूरी अन्य गतिविधियों में ही फँसी रह जाती हैं। अगर हम पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के रोज़गार के समग्र पैटर्न पर नज़र डालें, तो उनके रोज़गार के क्षेत्र में काफ़ी बदलाव देखने को मिलते हैं। इसका मतलब है कि रोज़गार से जुड़ी पुरानी रूढ़ियाँ अब तेज़ी से टूट रही हैं। गैर-कृषि क्षेत्रों में काम करने वाली युवा महिलाओं को अब मैन्युफैक्चरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यावसायिक सेवाएँ, ऑटोमोबाइल उद्योग जैसे क्षेत्रों में रोज़गार मिल रहा है। वहीं दूसरी ओर, महिलाओं का एक बहुत बड़ा तबका गैर-कृषि क्षेत्रों से बाहर भी हो रहा है, जिसकी मुख्य वजह आर्थिक तंगी या मजबूरी ही है।

दाखिलों में गिरावट

पिछले चार दशकों का एक अहम रुझान यह है कि भारत में युवाओं के शैक्षणिक दाखिलों में काफ़ी बढ़ोतरी हुई है, जबकि रोज़गार में गिरावट आई है। 1983-2023 के दौरान, 15-19 साल के पुरुषों में दाखिला 49 प्रतिशत से बढ़कर 73 प्रतिशत हो गया है और महिलाओं में यह 38 प्रतिशत से बढ़कर 68 प्रतिशत हो गया है। ज़्यादा उम्र वाले समूह के लिए, 2004 के बाद से यह बढ़ोतरी और भी तेज़ी से हुई है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लोगों के लिए भी दाखिलों में काफ़ी बढ़ोतरी हुई है।

इसकी एक वजह शिक्षा तक बेहतर पहुँच भी थी, जो कॉलेजों की संख्या बढ़ने के कारण संभव हुई ; 2010 में प्रति लाख युवाओं पर 29 कॉलेज थे, जो 2021 में बढ़कर 45 कॉलेज प्रति लाख युवा हो गए। बहरहाल, शिक्षा तक यह बढ़ी हुई पहुँच ज़्यादातर निजी संस्थानों की बढ़ती संख्या के कारण थी, इसलिए यह पहुँच अमीर परिवारों के पक्ष में ज़्यादा झुकी हुई पाई गई। बहरहाल, पिछले वर्षों में उच्च शिक्षा में दाखिलों में आई तेज़ी में अब गिरावट देखने को मिल रही है। शिक्षा में युवा पुरुषों की हिस्सेदारी 2017 में 38 प्रतिशत से घटकर 2024 में 34 प्रतिशत रह गई है, और जवाब देने वाले 72 प्रतिशत लोगों ने पढ़ाई छोड़ने का कारण घर-परिवार को आर्थिक सहारा देने की ज़रूरत बताया है। यह रुझान एक तरफ़ तो नौकरियों की उपलब्धता को लेकर कम उम्मीदों को दिखाता है, और दूसरी तरफ़, शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ-साथ स्किल प्रीमियम (कौशल का अतिरिक्त लाभ) में आ रही गिरावट को भी दर्शाता है। 20-29 आयु वर्ग के जो लोग बेरोज़गार हैं, उनमें से 67 प्रतिशत लोग स्नातक या उससे ज़्यादा पढ़े-लिखे हैं। दूसरी ओर, वेतन वाली नौकरियों में काम करने वाले लोगों में से केवल 6.7 प्रतिशत लोग ही स्नातक या उससे ज़्यादा पढ़े-लिखे हैं।

ये सभी आँकड़े साफ़ तौर पर %माँग और आपूर्ति% में असंतुलन की ओर इशारा करते हैं ; इसी असंतुलन के कारण हाल के वर्षों में शिक्षा से मिलने वाले लाभ में भी कमी आई है, क्योंकि स्नातक और बिना स्नातक लोगों की कमाई के बीच का अंतर अब कम होता दिख रहा है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि पढ़े-लिखे युवाओं को मजबूरन ऐसी नौकरियाँ करनी पड़ती हैं जिनके लिए कम कौशल की ज़रूरत होती है ; और निचले स्तर की नौकरियों के लिए उम्मीदवारों की संख्या (आपूर्ति) बढ़ जाने के कारण, %रिज़र्वेशन वेज% (यानी, वह न्यूनतम वेतन जिस पर कोई व्यक्ति काम करने को तैयार होता है) भी कम हो जाता है। इसका सीधा असर शिक्षा की आपूर्ति पर पड़ता है, क्योंकि जब युवाओं को यह लगने लगता है कि उच्च शिक्षा हासिल करने और नौकरी का इंतज़ार करने के बावजूद उन्हें कोई खास अतिरिक्त लाभ नहीं मिलने वाला है, तो वे पढ़ाई बीच में ही छोड़ने का फ़ैसला कर लेते हैं।

लेकिन समस्या इससे भी गहरी है। यह मुख्य रूप से यह दिखाता है कि हमारा उत्पादन ढांचा अभी तक बढ़ती हुई शिक्षित श्रम शक्ति को खपाने के लिए तैयार नहीं है, जिसका मतलब है कि कम-कुशल और सस्ते श्रम पर निर्भरता बनी हुई है। यह बात तब और भी हैरान करने वाली लगती है, जब हम टेक्नोलॉजी की एक नई लहर के दौर से गुज़र रहे हैं ; यह लहर तेज़ी से उन संज्ञानात्मक क्षमताओं पर निर्भर होती जा रही है, जिन्हें पारंपरिक तरीकों से हासिल करना लगभग असंभव है। विकास का ऐसा रास्ता, जो युवाओं – चाहे वे पुरुष हों या महिलाएं– को खेती-बाड़ी और कम आमदनी वाले स्वरोज़गार के कामों की ओर खींचता हो, वह शायद ही युवाओं को शिक्षा हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

यह बात 15 से 29 साल के आयु वर्ग में श्रम शक्ति की कम भागीदारी दर से भी ज़ाहिर होती है ; यह दर 43 प्रतिशत है, जो यह संकेत देती है कि ज़्यादातर युवा श्रम शक्ति का हिस्सा नहीं हैं – यानी, वे न तो कोई काम कर रहे हैं और न ही काम के लिए उपलब्ध हैं। नौकरी मिलने की बहुत कम उम्मीद होने के कारण वे हतोत्साहित हैं, और यही भारत के जनसांख्यिकीय बदलाव की निराशाजनक तस्वीर है।

संजय रॉय, अनुवाद, संजय पराते अर्थशास्त्री अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष 94242-31650